M.Phil. Prev. III Paper

IIIrd Paper Sem-I

CC-3

आगम साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

समस्त आगम साहित्य का आलोकन करने पर कुछ ऐसी प्रमुख प्रवृत्तियाँ उपलब्ध होती हैं जो सम्पूर्ण आगम साहित्य में वर्तमान हैं। यद्यपि विषय की दृष्टि से आगम ग्रन्थों में परस्पर अनेक प्रकार की विभिन्नताएँ पायी जाती हैं, तो भी कुछ ऐसी सामान्य प्रवृत्तियाँ हैं जो विभिन्नताओं के बीच समानता बनाये रखने में सक्षम हैं। मोटे रूप में शील, सदाचार, विचार-समन्वय, त्रिभुवन निर्माण सृष्टितत्त्व, कर्मसंस्कार सम्बन्धी प्रवृत्तियों को निम्नलिखित रूप में विभक्त किया जा सकता है।

① शील, सदाचार और संयम का निरूपण ② आत्मा के प्रति आस्था और उसके शोधन की विभिन्न प्रक्रियाएँ। ③ मानवता की प्रतिष्ठा के हेतु जाति भेद और वर्गभेद की निस्सारता। ④ अपवर्ग-प्राप्ति के हेतु आहार-विहार की शुद्धि एवं स्व की आलोचना ⑤ साधनामार्ग के विवेचनार्थ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का निरूपण। ⑥ वैदिक क्रियाकाण्ड का वैचारिक विरोध। ⑦ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की स्थापनाएँ और विवेचन। ⑧ आत्म शुद्धि हेतु आलोचना प्रतिक्रमण के साथ प्रायश्चित तथा तप साधनाओं का विश्लेषण ⑨ साहसिक पारलौकिक यात्रा सम्बन्धी एवं धार्मिक आख्यानों द्वारा जीवन की अनेक दृष्टियों से व्याख्या। ⑩ आचार की शुद्धि के लिए अहिंसा और विचार की शुद्धि के लिए स्याद्वाद सिद्धान्त का प्ररूपण। ⑪ राग द्वेषादि संस्कारों को अनात्म भाव होने का सिद्धान्त ⑫ अपने पुरुषार्थ पर विश्वास कर सर्वतोमुखी विशाल दृष्टि का विकास ⑬ अपने को स्वयं अपना भाग्यविधाता समझकर परोक्ष शक्ति का पल्ला छोड़ पुरुषार्थ में प्रवृत्त होने की प्रेरणा। ⑭ मिथ्याभिमान छोड़कर उदारतापूर्वक विचार सहिष्णु बन अपनी भूल को सहर्ष स्वीकार करने की प्रवृत्ति। ⑮ तत्त्वज्ञान के चिन्तन द्वारा अहंभाव का इदंभाव के साथ सामंजस्य। आदि

उपर्युक्त प्रवृत्तियों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारत के सांस्कृतिक इतिहास और विकास में आगमिक साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आगमिक साहित्य दो भागों में विभक्त है - अर्धमागधी और शौरसेनी। भगवान महावीर का मूल उपदेश अर्धमागधी में हुआ था। महावीर के शिष्य परम्परा ने भी जन सामान्य में मानवता एवं सदाचार के प्रचार के लिए इसी भाषा का व्यवहार किया था। महावीर के उपदेशों का संग्रह उनके समसामयिक शिष्य-गणधरों ने किया।

2

उन गणधरों द्वारा रचित ग्रंथ श्रुत कहलाये। श्रुत शब्द का अर्थ है सुना हुआ अर्थात जो गुरुमुख से सुना गया हो वह श्रुत है। भगवान महावीर के उपदेश उनके शिष्य-गणधरों ने सुने और गणधरों से उनके शिष्यों ने। इस प्रकार शिष्य-प्रशिष्यों के श्रवण द्वारा प्रवर्तित होने से श्रुत कहलाया और यही श्रुत आगे जाकर आगम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कहा जाता है कि समस्त श्रुत-ज्ञान के अन्तिम उत्तराधिकारी श्रुतकेवली भद्रबाहु हुए। इनका समय महावीर के निर्वाण के दो सौ वर्ष के बाद चन्द्रगुप्त के ~~सम्बन्ध~~ के राज्यकाल में माना जाता है।